आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जनसंवाद का पाक्षिक

वर्ष 5 | अंक 13 | उदयपुर बुधवार 15 जुलाई 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

राजस्थान में कांग्रेसी दंगल

-डॉ. वेदप्रताप वैदिक-

राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और उप-मुख्यमंत्री सचिन पायलट के दंगल का अभी अन्त नहीं हुआ लगता है। सचिन को उप-मुख्यमंत्री और कांग्रेस के अध्यक्ष पद से हटा दिया गया है। अब भी सचिन यदि कांग्रेस में बने रहते हैं और विधायक भी बने रहते हैं तो यह उनके जीते-जी मरने-जैसा है। अब वे यदि कांग्रेस छोड़ेंगे तो करेंगे क्या ? यदि वे कांग्रेस के बाहर रहकर गहलोत-सरकार को गिराने की कोशिश करेंगे तो उन्हें राजस्थान की भाजपा की शरण में जाना होगा।

भाजपा की केंद्र सरकार अपनी पूरी ताकत लगाकर सचिन की मदद करे तो गहलोत-सरकार गिर भी सकती है। भाजपा ने जैसे मध्यप्रदेश में ज्योतिरादित्य सिंधिया को साथ लेकर कांग्रेस सरकार गिरा दी, वैसा ही वह राजस्थान में भी कर सकती है। लेकिन यदि राजस्थान में ऐसा होता है तो सचिन पायलट और भाजपा को काफी बदनामी भुगतनी पड़ेगी।

भाजपा के कुछ नेताओं ने सचिन को अपनी पार्टी में आ जाने का न्यौता दे दिया है तो कुछ कह रहे हैं कि विधानसभा में शक्ति-परीक्षण होना चाहिए याने भाजपा येन-केन-प्रकारेण सत्ता में आना चाहती है।

इस प्रकरण से यह भी पता

चल रहा है कि भारतीय राजनीति में अब विचारधारा और सिद्धांत के दिन लद गए हैं। जो कांग्रेसी और भाजपाई नेता एक-दूसरे की निंदा करने में अपना गला बिठा लेते हैं, वे कुर्सी के खातिर एक-दूसरे के गले लगने के लिए तत्काल तैयार हो जाते हैं। इसीलिए अशोक गहलोत के इस आरोप पर अविश्वास नहीं होता कि कांग्रेस के विधायकों को तोड़ने के लिए करोड़ों रु. की रिश्वतें दी जा रही थीं। वह तो अभी भी दी जा सकती है और सरकार को गिराया भी जा सकता है। इसमें शक नहीं कि सचिन पायलट को राजस्थान में कांग्रेस की जीत का बड़ा श्रेय है लेकिन इस श्रेय के पीछे तत्कालीन भाजपा सरकार की अलोकप्रियता भी थी।

सचिन को मुख्यमंत्री क्यों नहीं बनाया गया, इसका जवाब तो कांग्रेस-अध्यक्ष ही दे सकते हैं लेकिन सचिन ने यदि उप-मुख्यमंत्री बनना स्वीकार किया तो उन्हें धैर्य रखना चाहिए था। आज नहीं तो कल उन्हें मुख्यमंत्री तो बनना ही था।

सचिन यदि कांग्रेस में बने रहते हैं और विधायक भी बने रहते हैं तो यह उनके जीते-जी मरने-जैसा है। भारतीय राजनीति में अब विचारधारा और सिद्धांत के दिन लद गए हैं। इसमें शक नहीं कि सचिन पायलट को राजस्थान में कांग्रेस की जीत का बड़ा श्रेय है लेकिन इस श्रेय के पीछे तत्कालीन भाजपा सरकार की अलोकप्रियता भी थी। गहलोत-सरकार यदि अपनी अवधि पूरी कर लेगी तो भी यह तो स्पष्ट हो गया है कि केंद्रीय स्तर पर कांग्रेस का नेतृत्व काफी कमजोर हो गया है।

लेकिन अब वे क्या करेंगे ? यदि गहलोत-सरकार उन्होंने गिरा भी दी तो क्या भाजपा उन्हें मुख्यमंत्री बना देगी ? गहलोत के रिश्तेदारों और नजदीकियों पर इस वक्त डाले गए छापों से भाजपा की केंद्र-सरकार की छवि भी खराब हो रही है। जहां तक कांग्रेस के केंद्रीय नेतृत्व का सवाल है, उसकी अक्षमता का जीवंत प्रमाण तो सिंधिया और पायलट हैं। गहलोत-सरकार, जो कि काफी अच्छा काम कर रही है, वह यदि अपनी अवधि पूरी कर लेगी तो भी यह तो स्पष्ट हो गया है कि केंद्रीय स्तर पर कांग्रेस का नेतृत्व काफी कमजोर हो गया है।

चेतन देवड़ा बने उदयपुर के नये कलक्टर

उदयपुर (विज्ञप्ति)। आईएएस अधिकारी चेतनराम देवड़ा ने 10 जुलाई को उदयपुर के नये जिला कलक्टर का पदभार ग्रहण कर लिया। पदभार ग्रहण के दौरान उन्होंने जिले के विभिन्न विभागों की बैठक ली। बैठक में जिला कलक्टर ने 'मैं चेतन देवड़ा, टीम उदयपुर का नया मेंबर...' शब्दों के साथ अपना परिचय दिया और अधिकारियों को सन्देश दिया कि अब कोई लापरवाही नहीं होगी और सभी को मिलकर काम करना होगा।

समीक्षा बैठक में उन्होंने तीन घंटे से अधिक समय तक एक-एक विभागीय अधिकारी से व्यक्तिगत संवाद किया और परिचय के साथ विभागीय योजनाओं की प्रगति की समीक्षा करते हुए कमियों पर महत्त्वपूर्ण निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि उदयपुर में प्रशासनिक व विभागीय टीम अच्छी है ऐसे में प्रयास रहेगा कि लोगों को समय पर बेहतर सुविधाएं और सरकार की योजनाओं का लाभ प्राप्त हो। बैठक में देवड़ा एक्शन मोड में नजर आये। उन्होंने कुछ विभागों की कमियों को बातों-बातों में ही पकड़ लिया और उनको तल्ख लहजे में इसे सुधारने की सलाह भी दी। देवड़ा ने कहा कि सरकार की मंशा है कि समय पर पात्र लोगों को पेंशन मिले। इसलिए अब जिले में हर मंगलवार को पेंशन-डे मनाया जाएगा।

कलक्टर ने सीएमएचओ डॉ. दिनेश खराड़ी से जिले में कोरोना प्रकरणों की वर्तमान स्थिति के साथ हर रोज ब्लॉक स्तर तक की जा रही सेंपलिंग के बारे में जानकारी ली।

बैठक में नगरनिगम, पीएचईडी, कृषि, रसद, श्रम, शिक्षा, खान, जल, सहकारिता, आईसीडीएस, पीडब्ल्यूडी, पर्यटन, अल्पसंख्यक, खेल, प्रदूषण नियंत्रण, महिला अधिकारिता, सूचना प्रौद्योगिकी, पंचायती राज और अन्य विभागीय योजनाओं पर संबंधित अधिकारियों से चर्चा की।

भाजपा अभी बहुमत परीक्षण की नहीं करेगी मांग

जयपुर (एजेंसी)। कांग्रेस के अंदरूनी सियासी घमासान के चलते सरकार के विधानसभा में बहुमत परीक्षण को लेकर भाजपा फिलहाल राज्यपाल से इसकी मांग नहीं करेंगी। भाजपा अभी पायलट गुट और सरकार के पास विधायकों की गणित की स्थिति स्पष्ट होने तक वेट एण्ड वॉच करेगी। भाजपा पायलट गुट के आगामी कदम और आगामी दिनों में बदलने वाली परिस्थितियों के मुताबित फैसला करेगी कि उसे क्या करना है।

भाजपा के प्रदेशाध्यक्ष सतीश पूनिया, नेता प्रतिपक्ष गुलाबचन्द कटारिया, उपनेता प्रतिपक्ष राजेन्द्र राठौड़, पूर्व प्रदेशाध्यक्ष अरूण चतुर्वेदी, पूर्व मंत्री वासुदेव देवनानी ने राजनीतिक हालातों को लेकर पार्टी मुख्यालय में भाजपा की भूमिका पर मंत्रणा की।

पूनिया, कटारिया और राठौड़ ने पायलट गुट के विधायकों को विधानसभा अध्यक्ष की ओर से व्हिप के उल्लंघन किये जाने को लेकर जारी नोटिस पर कहा कि पार्टी स्तर की बैठक में व्हिप असंवैधानिक होता है। पार्टी अपने स्तर पर विधायकों पर जो कार्यवाही करे वह उसका अधिकार है लेकिन विधानसभा इसे व्हिप का उल्लंघन नहीं मान सकती है। उन्हें नोटिस दिया जाना असंवैधानिक है। विधानसभा सत्र के दौरान विधायकों को दल की ओर से जारी व्हिप ही संवैधानिक माना जाता है, तभी उनकी सदस्यता जा सकती है। उन्होंने कहा कि बसपा के विधायकों का कांग्रेस में विलय को जारी नोटिस पर अभी तक कोई कार्यवाही नहीं हुई है। पार्टी संविधान के अनुसार विधायकों को पार्टी बैठक में नहीं जाने का नोटिस जारी कर सकती है।

डॉ. एस. के. सामर सम्मानित

उदयपुर (का. सं.)। विश्व जनसंख्या दिवस पर जनसंख्या स्थिरीकरण एवं मातृ शिशु एवं परिवार कल्याण सेवाओं के क्षेत्र में वर्ष 2019-20 में उल्लेखनीय

उपलब्धि व उत्कृष्ट सेवाओं हेतु पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज (पीआईएमएस), उमरड़ा के सर्जन डॉ. एस. के. सामर को सम्मानित किया गया। चेयरमैन आशीष अग्रवाल तथा उप चेयरमैन श्रीमती शीतल अग्रवाल ने डॉ. सामर और टीम को बधाई दी।

कलेक्ट्री में आयोजित पुरस्कार कार्यक्रम में मुख्य अतिथि संभागीय निदेशक जुलफीकार अली काजी, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दिनेश खराड़ी, अतिरिक्त मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. रागिनी अग्रवाल उपस्थित थे। वी.सी. का संचालन स्वास्थ्य मंत्री डॉ. रघु शर्मा की अध्यक्षता में हुआ। डॉ. सामर ने बताया कि संस्थान में परिवार कल्याण की सभी सेवाएं वर्ष 2015 से प्रारम्भ की गई। अब तक 6148 सफल नसबन्दी आपरेशन किये जा चुके हैं। इनमें 161 पुरुष नसबन्दी नई तकनीक एन.एस.वी. द्वारा की गई जो सफल रही।

तीजनबाई पंडवानी को नई शैली में जीवंत करने वाली पहली महिला

(डॉ. विद्याविन्दुसिंह से तीजनबाई की हुई बातचीत के प्रमुख अंश)

तीजनबाई को देखकर ऐसा लगा जैसे लय और अभिनय उनके शरीर की पोर-पोर से निकलने को आतुर है। उनकी आंखें जैसे हर समय महाभारत का दृश्य देखती रहती हैं। तीजनबाई बोली- ''मेरी मां का क्रोध भी चरम सीमा पर पहुंच गया और वह मेरे लिए अत्यन्त निर्दयी हो गई। मेरे बाल खींचकर कहतीं, 'बोल, फिर नाचेगी ?' मैं कहती, 'हां नाचूंगी।' तब वह मुझे लात, घूसों, थप्पड़ों से ही नहीं, डण्डों से भी मारती। झाड़ू का सिरा मेरे मुंह में डालकर कहती- 'देखूं अब कैसे तू गाती है।' मां भी रोती और मैं भी रोती। फिर हम दोनों थककर चुप हो जाते पर जितनी ही मैं मार खाती उतनी ही मेरी लगन पंडवानी के प्रति बढ़ती जाती। जितना मुझे सताया जाता उतना ही मेरे मन में कविता लहरा की तरह आती।

खेत के मेड़ या जंगल में जो कविता मेरे दिमाग में रहती उसे पूरा करती। गाती और अभिनय करती। दो बार दुहरा लेने से मुझे वह अंश याद हो जाता। नाना कहते- 'तुम समाज के अपमान की चिन्ता मत करो। भगवान चाहेगा तो तुम एकदिन आकाश में उड़ोगी।' मेरी प्रत्येक प्रस्तुति में गीत के बोल बदल जाते हैं। मुझे लगता है कि मां सरस्वती मेरी जीभ पर बैठकर बोलने लगती हैं। मुझे आश्चर्य होता है कि मैं एक अनपढ़, विद्वानों की सभा में कैसे इतना कुछ कह जाती हूं।''

सन् 1992 में आकाशवाणी लखनऊ के लोकसंगीत के एक कार्यक्रम में तीजनबाई ने अपनी प्रस्तुति दी थी। दूसरे दिन उनसे मेरी भेंट, रेल्वे के एक अधिकारी दिनेश श्रीवास्तव के घर पर हुई। तीजनबाई को देखकर ऐसा लगा जैसे लय और अभिनय उनके शरीर की पोर-पोर से निकलने को आतुर है। उनकी आंखें जैसे हर समय महाभारत का दृश्य देखती रहती हैं।

प्रश्न - आपने पंडवानी किससे सीखी ?

तीजन - मैंने अपने नाना, जो मेरी मां के चाचा थे, उनसे पंडवानी सीखी। नाना एकतारा और तमूरा लेकर पंडवानी यानी पाण्डवों की कथा, कहानी के रूप में छत्तीसगढ़ी में कहा करते थे। वे अलग रहा करते थे। मैं उनसे बहुत डरती थी। छुप-छुपकर उन्हें देखती रहती थी।

एकदिन मैं अंधेरे में खड़ी होकर छुपकर उनकी कथा सुन रही थी। बाहर बारिश होने लगी तो मैं बरामदे में छुपकर वहां से उन्हें देखने लगी। इतने में नाना चोंगी पीने के लिए करताल तमूरा रखकर बाहर की ओर निकले। बारिश के कारण में भाग न सकी। छुपी खड़ी रही। अंधेरे में मुझे खड़ा देखकर उन्होंने पूछा कौन ? मैं डरते सामने आ गई।

उन्होंने पूछा यहां क्यों खड़ी हो ? मैंने बताया कि आप जो कर रहे थे वह सुन रही थी। नाना ने पूछा, कितना सुना है तुमने ? मैंने चार दिन से लगातार जितना सुना था, पूरा दुहरा दिया तो खुशी से उनकी आंखों में आंसू आ गये। नाना ने मुझे बिठाकर फिर से प्रारम्भ से पूरी कथा सुनाई।

आदि पर्व से स्वर्गारोहण तक की कथा वे भावविभोर होकर सुनाते रहे और मैं मुग्ध होकर सुनती रही। उसे सुनकर मैं बावली हो गई। उस समय मेरी उम्र 13 वर्ष थी। नाना से मैंने एक महीना सीखा और मैं भी गाने और अभिनय करने लगी। नाना गद्य में कहते थे। मैं पद्य में वही कथा रचने लगी और गाने लगी।

लोगों ने मुझे पागल करार दिया। यहां तक कि बचपन में जहां मेरी शादी हुई थी वे लोग मुझे पागल समझकर मेरा गौना नहीं ले गये। मैं अपने परिवार वालों से, अड़ोसियों-पड़ोसियों से दुत्कारी जाती रही और उनकी डांट-फटकार के साथ-साथ मार भी खाती रही लेकिन मैं हर वक्त अपनी धुन में रहती और डांट-मार की परवाह नहीं करती थी। लोगों ने मेरी मां को पेरशान करना शुरू किया, 'तेरी लड़की पागल हो गई है, उसे घर में बांध कर रखो। वह बेशर्मी की तरह से मर्दों का नाच नाचती फिर रही है। तुम्हारे और बच्चों का ब्याह कौन करेगा! तुम्हारी और लड़कियां कुंवारी रह जायेगी। लड़के को कोई अपनी बेटी नहीं देगा।'

डॉ. विद्याविंदुसिंह

अब तो मेरी मां का क्रोध भी चरम सीमा पर पहुंच गया और वह मेरे लिए अत्यन्त निर्दयी हो गई। मेरे बाल खींचकर कहतीं, 'बोल, फिर नाचेगी ?' मैं कहती, 'हां नाचूंगी।'

तब वह मुझे लात, घूसों, थप्पड़ों से ही नहीं, डण्डों से भी मारती। झाड़ू का सिरा मेरे मुंह में डालकर कहती- 'देखूं अब कैसे तू गाती है।' मां भी रोती और मैं भी रोती। फिर हम दोनों थककर चुप हो जाते पर जितनी ही मैं मार खाती उतनी ही मेरी लगन पंडवानी के प्रति बढ़ती जाती।

मेरे गांव की लड़कियां मुझसे बात नहीं करतीं। उनके मां-बाप उन्हें फटकारते- 'खबरदार, तीजन को छुआ या उससे बात की तो हड्डियां तोड़ देंगे।' जिस घाट पर मैं स्नान करती वहां लड़कियां नहीं जाती थी। मैं पानी भरने जाती तो पुकारने पर भी कोई लड़की मेरे सिर पर गुन्डी (गगरी) रखने नहीं आती। मैं आधी-आधी गगरी पानी भरकर लाती किन्तु जितना मुझे सताया जाता उतना ही मेरे मन में कविता लहरा की तरह आती।

इस तरह का लहरा इसके पहले हमारे यहां किसी को नहीं आया था। मैं छत्तीसगढ़ी में सुनी महाभारत की कथा को कविता में रचने लगी किन्तु में लिख नहीं सकती थी, क्योंकि मैं पढ़ी-लिखी बिल्कुल नहीं थी।

अपने प्रदर्शन की बुलंदगी में तीजनबाई

मेरे मन में जो कविता आती थी भूल न जाऊं इसलिए यह जरूरी था कि मैं उसे गा और अभिनय करके याद करलूं लेकिन गांव में और घर में ऐसा कर पाना सम्भव नहीं था। लोग मेरे शुरू करते ही मुझे मारने दौड़ पड़ते। इसलिए मैंने एक तरीका अपनाया। मैं झोड़ी-झउवा (झड़लिया) लेकर खेत और जंगल की ओर चल देती। मां पूछती कहां जा रही हो ? मैं बोलती लकड़ी बीनने जा रही हूं। वहां खेत के मेड़ या जंगल में जो कविता मेरे दिमाग में रहती उसे पूरा करती। गाती और अभिनय करती। दो बार दुहरा लेने से मुझे वह अंश याद हो जाता।

शाम को घर लौटती तो लकड़ियां नाम मात्र की ले आ पाती थी। इसके लिए भी मुझे मार खानी पड़ती थी। मेरे नाना मुझे ढाढ़स बन्धाते- 'तुम समाज के इस अपमान की चिन्ता मत करो। मेरी बात सीख लो। इन सब पर ध्यान न दो। भगवान चाहेगा तो तुम एकदिन आकाश में उड़ोगी।'

यह कहते हुए तीजनबाईआत्म गौरव के बोध से भरकर कह उठती हैं- 'आज नाना का आशीर्वाद फलित हुआ और मैं आकाश में ही तो उड़ रही हूं। मैंने कब सोचा था कि मुझे पढ़े-लिखे विद्वानों के बीच इतना सम्मान मिलेगा।'

प्रश्न - आपकी शैली और आपके नाना की शैली में क्या कोई अन्तर है ?

तीजन - जी हां, मैंने नई शैली बनाई और नाना की शैली पुरानी वेदमती शैली थी।

प्रश्न - दोनों की शैलियों में क्या अन्तर है ?

तीजन - पहिले केवल गाते थे। मैं एक्शन भी करती हूं। वेदमती शैली शास्त्रीय थी। वह पूरी महाभारत के आधार पर थी। उसमें वे लोग अपनी ओर से नहीं जोड़ते थे। मेरी शैली कपाली कल्पना प्रधान है।

इसमें मैं महाभारत के प्रसंगों को अपनी कल्पना का रंग देकर उस घटना को नये-नये ढंग से प्रस्तुत करती हूं। इसके लिए मैं कभी प्रयास नहीं करती बल्कि लहरा के रूप में मेरे मन में जो घटनाएं कौंधती हैं और मैं उन्हें अपने गीतों और अभिनय में पिरो देती हूं।

पहले केवल पुरुष ही पंडवानी गाते थे। मैं पहली स्त्री हूं जो उस क्षेत्र से जुड़ी। इसीलिए तो मेरा इतना विरोध हुआ। तीजनबाई पुन: विगत स्मृतियों में खोकर कहती हैं कि स्त्रियों की लज्जा, संकोच या शर्म जैसी चीज मेरे पास थी ही नहीं। इसीलिए लोग मेरे पीछे और पड़ गये थे।

मेरे माता-पिता को लोग पेरशान करके कहते थे- 'पूरे गांव की नाक कट रही है। तुम लोग इसे खाना मत दो तो कैसे गायेगी।' कहीं मुझे कोई एक्शन करते और गाते देख लेता तो उसकी खूब बढ़ा-चढ़ाकर कमेन्ट्री मेरे मां-बाप को सुनाई जाती।

जिस नाना से मैंने सीखा था उनकी पत्नी यानी मेरी नानीजी मुझे देखकर घृणा से थूकती थी। नाना को बुरा-भला कहती थी। एकदिन नानी ने मुझे कहा कि तुझे शरम नहीं आती, नाना के साथ उनके कमरे में दिनभर घुसी रहती है।

तब तक नानाजी आ गए। उन्होंने नानी को डांट दिया। नानी बोली- 'तुम्हें भी शरम नहीं है। हर वक्त सयानी लड़की को साथ लिए बैठे रहते हो।' इस पर नाना को क्रोध आ गया और उन्होंने नानी को मार दिया। नानी का हाथ टूट गया। नाना बड़बड़ा रहे थे, इसे कोई परख नहीं पा रहा है। मैं जानता हूं इसे। ऐसी गंदी बातें आइंदा न करना।

प्रश्न - आपने सबसे पहले लोगों की मांग पर कब अपनी कला का प्रदर्शन किया ?

तीजन - उसकी भी एक मनोरंजक कहानी है। मेरे मां-बाप बहुत गरीब थे। हम लोग दुर्ग जिले में थे। मैंने अपने भाई-बहन का हाथ पकड़कर भीख भी मांगी है। मेरे गांव गनियारी से लगभग 18 किलोमीटर दूर एक गांव है चन्द्रखुरी। वहां कभी मैं गांव वालों के साथ छीनपत्ती (खजूरपत्ती) काटने गई थी। ये पत्ती काटकर चटाइयां आदि बनती थी। एकबार जब बहुत मारा पीटी हुई तो मैं अपने गांव से भागकर पैदल ही चन्द्रखुरी चली गई।

-शेष पृष्ठ सात पर

स्मृतियों के शिखर (103) : डॉ. महेन्द्र भानावत

घाट-घाट के तीर्थ दण्डीस्वामी महन्त मोहनानंद

आमेटा समाज में कई ऐसी विभूतियां हुईं जिन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों से विशिष्ट पहचान बनाई। कहा जाता है कि गुजरात प्रांत के लाट प्रदेश से सहस्त्र औदिच्य ब्राह्मणों का एक दल मेदपाट- मेवाड़ में चारभुजारोड़ आमेट आकर बस गया। कालान्तर में आमेट नाम से एक जाति ही विकसित हुई जो आमेटा कहलाई। इस संबंध में कहा गया है- सामेट ग्रामे वसनाद्बभूव आमेटाख्य समागता।

आमेटा जाति में जो विभूतियां हुईं उनमें मेवाड़ महाराणा मोकल, लाखा और कुंभा के राजगुरु तांत्रिक तिल्हण भट्ट (टीला भट्ट, गादोली), महाराणा राजसिंह द्वारा निर्मित राजसमंद पर आयोजित यज्ञ में मंत्र बल से अग्नि प्रज्वलित करने वाले लक्ष्मीदास (कथा व्यास, नवाणिया), नर्मदा तट के तपस्वी संत विद्यानंद (नंदराम, नवाणिया), उत्तराखंड के योगाचार्य हरिहरानंद (भभूतशंकर, खेड़ी), सनातन और जैनधर्म के समन्वयक धर्मसागर महाराज (चुन्नीलाल, कुराबड़), रामानुज सम्प्रदाय के प्रसिद्ध संत हरिरामाचार्य (बनेड़ा), एकलिंगजी के पीठाधीश गोस्वामी राघवानंद, संत परमानंद (सलूम्बर) आदि संत तथा विद्वत्वर्य अभिनव मम्मट गिरधरलाल शास्त्री एवं नव पाणिनी पं. बालकृष्ण शास्त्री (उदयपुर) के नाम उल्लेखनीय हैं। इसी क्रम में महंत मोहनानंद दंडीस्वामी (मोहनलाल, कुराबड़) का नाम अग्रणी है।

महन्त मोहनानन्द तीर्थ का जन्म राजस्थान के डूंगरपुर जिले के गांव बनकोड़ा में 10 अगस्त 1922 को हुआ। अपने पिता गोरधनलाल कश्यप की तरह मोहनानन्द भी सरल स्वभावी, साधुवृत्ति के सहज संस्कार लिए थे। सातवीं कक्षा तक बनकोड़ा में अध्ययनोपरांत वे भूपालसागर के शूगर मिल में पांच वर्ष रहे। यहां वे गन्नों से भरी बैलगाड़ियां तोलने का काम करते रहे। सर्दी में गन्नों की फसल होने के कारण औसतन पचास गाड़ियां प्रतिदिन आतीं।

इधर तीन तरह के गन्नों की पैदावार होती। काले गन्ने थोड़े लम्बे और पतले होते। इन्हें सियार अपना भोजन नहीं बनाते। सफेद गन्ने अपेक्षाकृत छोटे होते। पैंडा गन्ने नरम, रसवाले तथा मोटे होते।

एक बार गन्ने की पंगेरी बोने पर तीन वर्ष लगातार फसल होती। तब गन्ना एक रुपया चौदह आना मन के भाव से खरीदा जाता। गाड़ी में साठ मन वजन होता। तब सोलह आने का एक रूपया होता तथा एक आने में बारह पाई चलती। इसी प्रकार चालीस सेर का एक मन होता। आज एक मन का वजन ढाई क्विंटल बैठता है।

मोहनानन्द ने लगभग बीस वर्ष उदयपुर जिले के करावली गांव की जैन पाठशाला में अध्यापन किया। इस बीच उनका गांव के ही रामकृष्ण गुड़लिया की पुत्री नाथीबाई से विवाह कर दिया गया।

तेईस वर्ष गृहस्थ जीवन व्यतीत करने के पश्चात उनकी पत्नी का निधन होने पर उन्हें वैराग्य उत्पन्न हो गया। घरबार त्याग वे संन्यासी बन गये और उदयपुर से कोई पच्चीस किलोमीटर दूर झामेश्वर महादेव की सेवा-पूजा में लग गये। यहां वर्ष भर रहने के उपरान्त वे कुराबड़ के पास बेमला गांव चले गये। वहां उन्होंने शिव-मंदिर का निर्माण और एक बड़ा यादगार यज्ञ करवाया।

यहां तीन वर्ष तपाराधना कर मोहनानन्द कंथोड़ा पहाड़ी के बीच स्थित गोपेश्वर चले गये। जयसमंद से जो नाला प्रवाह लिये चलता है वह कंथोड़ा होता हुआ माही नदी में मिल जाता है। यहां से मोहनानन्द जससमंद के रखेश्वर अभयारण्य में रहे। तीन माह के बाद यहां से जावर माइंस चले गये। यहां भी अधिक नहीं रहे। मथुरा के पास बामणों का धाणा में भी ये रहे। अमरनाथ, बद्रीनारायण भी इनका तपस्या स्थल रहा।

मोहनानन्द ने द्वारिका शंकराचार्य स्वरूपानंद से ब्रह्मचर्य की दीक्षा ग्रहण की। यह दीक्षा मध्यप्रदेश के परमहंसी गंगा आश्रम में 7 मई 1964 को हुई। इसी प्रकार 25 अप्रैल 2004 को उज्जैन के कुंभ मेले में दंडीस्वामी की दीक्षा ली।

यह दीक्षा श्री 1008 स्वामी भूरारामजी महाराज दंडीस्वामी संस्थान वाराणसी के अध्यक्ष हरिस्वरानंद तीर्थ द्वारा प्रदान की गई। मोहनानन्द बुलंदशहर जिले के कर्णवास गांव की गंगा के राजघाट पर भी डेढ़ वर्ष तपे। वहां दानवीर कर्ण प्रतिदिन सवा मन स्वर्ण दान करता था।

महन्त मोहनानन्द का महत्वपूर्ण पक्ष यह रहा कि वे सदैव घुमक्कड़ रहे। तपस्यारत रहे और कहीं बंधे नहीं। अच्छे से अच्छे स्थान को भी छोड़ा और मन की मौज बनाये रखी। संत महन्त कोई भी हो, बहता पानी उज्वल होता है। संत को सत की आराधना और नित नई खोज में

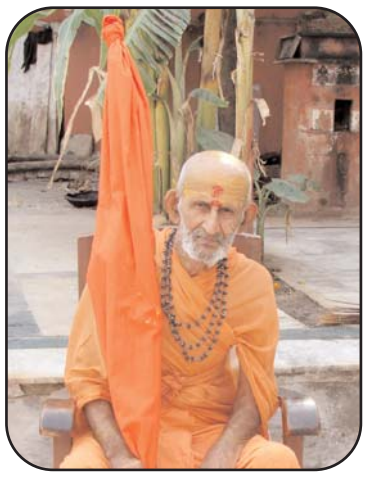

रहना पड़ता है। उसकी खोज की पगडंडियां स्थिर नहीं होनी चाहिए। चलता हुआ संत कभी मोहग्रस्त नहीं होता।

उसे किसी का त्याग विछोह नहीं देता। वे घाट-घाट के अनुभवों का सींचन कर अपने को तपस्वी बनाते हुए यशस्वी बनने के अभ्यासी होते हैं। उन्हें दुनियादारी की चिंता नहीं सताती। वे स्व में डूबकर आत्मा का उद्धार करना चाहते हैं। मात्र उपदेशक बन समाज अथवा जनकल्याण ही उनका लक्ष्य नहीं रहता।

कर्णवास से कुछ भक्त लोग मोहनानन्द को उदयपुर ले आये। यहां शास्त्री सर्कल स्थित आत्मानंदजी का आश्रम था। उनके शिष्य पर्वतगिरी के देह विसर्जन के बाद आश्रम सूना हो गया फलस्वरूप मोहनानन्द से अरदास की गई। वे नहीं चाहते थे कि कहीं स्थिरवास करें लेकिन भक्तों ने जब आश्रम की स्थिति और भावी समस्या की ओर उनका ध्यान केंद्रित किया तो वे मजबूर हुए और आश्विन कृष्णा अमावस्या संवत् 1990 को यहां का आश्रम संभाला।

उदयपुर का यह आश्रम सौ वर्ष प्रचीन है। कालादांता हनुमान के नाम से प्रसिद्ध इस आश्रम में हनुमानजी एक प्रस्तर के आगे-पीछे दोनों ओर उत्कीर्ण हैं। भक्त परिक्रमा कर दोनों हनुमानजी के दर्शन करते हैं। ऐसी प्रतिमा केवल नासिक में है, अन्यत्र कहीं नहीं। ये हनुमानजी खड़े हैं। इनके पास कालभैरव की बैठी प्रतिमा है। प्रतिमाओं में यही सबसे प्राचीन प्रतिमा है।

मोहनानन्द ने यहां आकर अंबामाता और गणेश की मंदरियां बनवाईं। एक मंदिर उनके द्वारा कुराबड़ के पास टोड़ी गांव की पहाड़ी की तलहटी में भी बनवाया गया। यह अंबामाता का मंदिर है। पूर्व में यह स्थल राजदरबार में मृत्यु प्राप्त हुओं का अर्द्ध विश्राम स्थल रहा। इस स्थल की प्रसिद्धि काली मगरी नाम से ख्यात रही। यहां की चट्टान काले दांतावाली थी। इस कारण आमजन इसे कालादांता कहता।

मोहनानन्द कई देव-स्थानकों का भ्रमण करते-करते तीर्थवत ही हो गये। हर जगह उन्हें अनुभवों का, रहस्य रोमांच का अजूबा मिला लेकिन वह गूंगे के गुड़ जैसा ही अकथनीय एवं अवर्णनीय है। उन्होंने जो कुछ देखा, महसूस किया, दूसरा उसे महसूस नहीं कर सकता। बहुत सी बातें कहने की भी नहीं होतीं। कहने से आयुष्य घटित होता है। तपाराधना का फल भी क्षीण होता है। साथ ही आगे जो कुछ प्राप्त होने को होता है, उससे भी वंचित रह जाना पड़ता है।

बद्रीनाथ में घंटाकर्ण के दर्शनों ने मोहनानन्द में अजीब रोमांच पैदा कर दिया। घंटाकर्ण शंकर का बड़ा भक्त था। दोनों कानों में घंटे बंधे रहने के कारण ही वह घंटाकर्ण कहलाया। एक दिन प्रात: चार बजे किसी ने किंवाड़ खटखट किये। मोहनानन्द उठे। देखा तो उन्हें एक अच्छा सा हृष्टपुष्ट कोई तीस हाथ की लम्बाईवाला शरीर लिए व्यक्ति दिखाई दिया।

उन्नत और घनी मूछों वाले उस व्यक्ति को मोहनानन्द निहारते रहे कि उनकी दृष्टि उसके पांवों पर स्थिर हो गई। वह तेईस दिन तक उन्हें दर्शन देता रहा। उन्हें बताया गया कि पांवों पर दृष्टि केंद्रित करने की बजाय यदि दंडीस्वामी उसे दंडवत किये रहते तो निहाल हो जाते। मुँह मांगा वरदान पा जाते।

यहीं नहीं, यहीं एक ऊंचे पर्वत पर उन्हें एक तपस्विनी के दर्शन हुए। वह पर्वत कोई दो किलोमीटर ऊंचाई लिए था और उनकी नजर से एक किलोमीटर की दूरी पर था। उस पर्वत पर उर्वशी तपस्या करती है इसीलिए वह पर्वत ही उर्वशी पर्वत के नाम से जाना जाता है। उर्वशी के सिर पर मुकुट शोभित था। उसके रंगीन परिधान चमचमा रहे थे। वह देवी दिव्य स्वरूपा थी। उसका सौंदर्य कहते नहीं बनता था।

गोपेश्वर स्थान वीरान जगह पर है। यहां हर साधु नहीं टिकता। शुद्धात्मा साधु-संत-महन्त ही यहां बसेरा कर पाते हैं। वह भी केवल कुछ समय के लिए। प्राकृतिक सौंदर्य के साथ ही वहां सर्पों की बहार देखी जाती है। पग-पग पर सर्पों का पड़ाव भयग्रस्त बना देता है। मोहनानन्द सर्पों से जरा भी विचलित नहीं हुए। उन्होंने बताया कि कई देव सर्प के रूप में विचरण करते हैं और वे तनिक भी जहरीले नहीं होते। संध्या को उन्होंने जो भीमकाय सर्प देखा, दूसरे दिन वह सर्प तो नहीं दिखाई दिया पर उसकी कांचली जरूर देखी गई।

मोहनानन्द ने बताया कि सांप भी संत ही होता है। वह भी तपस्या करता है। देवता भी सर्प योनि में विचरण करते हैं। वे हवाभक्षी होते हैं और मनचाहा रूप धारण करने में सक्षम होते हैं। गोगाजी, तेजाजी, कल्लाजी, देवनारायण आदि सर्प रूप में लोकदेवता हैं।

अपने घुड़ले के शरीर में आकर वे लोगों के दु:ख दर्द और संकट दूर करते हैं। मणिधारी नाग के सिर पर मणि होती है जो रात्रि के गहन अंधेरे में प्रकाश देती है। बूढ़े, हजार वर्ष की उम्र वाले सर्पों के मणि होती है। शिकार के वक्त वे सर्प एक जगह अपनी मणि रखकर उसके प्रकाश में शिकार तलाशते हैं।

अखेश्वर में तो शेर ही अधिक मिले। सर्प की तरह शेर भी देवत-रूप होते हैं। कई देवस्थान ऐसे हैं जहां प्रति रात्रि शेर आता है और देव-प्रतिमा के दर्शन कर चला जाता है। किसी को कोई नुकसान नहीं पहुंचाता। असली शेर केसरी कहलाता है। उसके दर्शन करना ही शुभ-मंगल है। भाग्यशालियों को ही उसके दर्शन नसीब होते हैं। लोकप्रसिद्धि है कि पहुंची हुई शक्तियां शेर-रूप में भी भ्रमण करती हैं। शेर और देव-शेर में भेद करना बड़ा कठिन है। यों शेर देवी-देवता की सवारी भी है। शेर तो फिर भी नजर आ जाता है पर उसके ऊपर बैठा सवार देवी अथवा देव नजर नहीं आता। देवता वायु-रूप होते हैं अत: हमारी सामान्य आंखों से दृष्टिगत नहीं होते।

भीलों के लोकनृत्य गवरी में कई तरह के स्वांग आते हैं। अंत में एक व्यक्ति देवी का वाहन शेर बनकर आता है। वह एक पुरूष होता है जिसके खुले बदन पर शेर जैसी ही पीली-केशरिया रंग मिश्रित धारियों के साथ काली धारियां की हुई होती हैं। वह अपने हाथ-पांव जमीन पर टिकाये कई तरह के रोमांचक प्रदर्शन करता है। खासकर, बीमार बच्चे उसके शरीर के नीचे से निकाले जाते हैं जिससे उन पर आई आफत अथवा मांदगी नौ-दो-ग्यारह होती नजर आती है।

- शेष पृष्ठ सात पर

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 15 जुलाई 2020

सम्पादकीय

शोधकार्यों की गुणवत्ता

शोधकार्यों की गुणवत्ता को लेकर इन दिनों कुछ अधिक ही होहल्ला सुनाई दे रहा है। इस होहल्ले में यह भी पता नहीं चल पा रहा है कि कौन किसको जिम्मेदार ठहरा रहा है और यदि कोई ईमानदार जिम्मेदारी की बात कहता भी है तो उसकी कौन सुन रहा है और कभी-कभी उसके खिलाफ भी होहल्ला करने के रास्ते खोज लिये जाते हैं।

इस होहल्ले में कई बार सच की पिटाई होती नजर आती है। इस कारण सचवादी साइलेन्ट रहकर होहल्ले से दूर रहने का रास्ता चुन लेते हैं। प्रश्न है, क्या होहल्ला शोध को लेकर ही है? शिक्षा को लेकर इससे भी अधिक होहल्ला है। हल्ला शिक्षा संस्थानों को लेकर भी कम नहीं है। पठन-पाठन की सुविधाओं की अनदेखी पर भी आये दिन होहल्ला सुनने को मिल रहा है।

कहीं पढ़ाने वाले नहीं हैं तो कहीं पढ़ने वालों की कमी है। कहीं पढ़ाई के पूरे साधन नहीं हैं। सरकारी और प्राइवेट शिक्षण संस्थानों को लेकर भी समस्याएं कम नहीं हैं। पाठ्य सामग्री को लेकर उठने वाले होहल्ले हैं तो पाठ्य समितियों के चयन और पाठ्य निर्माता संस्थाओं पर भी होहल्ले होते देखे गये हैं।

शोधकार्यों को लेकर अनेक बार अनेक तरह की बातें उठी हैं, उठती रहती हैं। यह भी कि जिन्हें डिग्री मिल गई। उनके शोधकार्यों पर जो सवाल उठे, उनका क्या हुआ?

लोगों में शोध को लेकर अनेक तरह की फुसफुसाहट है। शोध के लिए विद्यार्थी की कई प्रकार से ठोकपीट कर परीक्षा ली जाती है, उसके बाद गाइड मुकर्रर होता है। सिनोप्सिस एप्रूवल के लिए एक्सपर्ट मुकर्रर होते हैं फिर शोधप्रबन्ध लिखा जाता है। उसे जांचने वाले धुरंधर शिक्षाविद विश्वविद्यालय तै करता है।

वे शोधप्रबन्ध पर अपना मत-सम्मत लिखते हैं बावजूद इसके शोधार्थी को फिर खुले साक्षात्कार के लिए उपस्थित होकर अपना पक्ष प्रस्तुत करना पड़ता है तब जाकर बड़ी मुश्किल से उसे उपाधि मिलती है।

इतना होने पर भी होहल्ला चुप-शान्त नहीं हो पाता है तो इसका जिम्मेदार आखिर कौन है? मौलिक और स्तरीय चिन्तन का जो ढींढ़ोरा पिटा जाता है वह क्या है? निर्देशक-परीक्षक या विश्वविद्यालय अपने दायित्वों का ईमानदारी से निर्वाह नहीं कर रहे हैं तो हम कहना क्या चाहते हैं? शोध की वह गुणवत्ता नहीं रही और वह अपने मूल उद्देश्य से भटक गई तो इसका इलाज किसके पास है और वह है तो क्या है?

शिक्षा की डिग्री का जो उद्देश्य है वही शोध की उपाधि का है। कोई डिग्री लेकर नौकरी ही तो करेगा। हम भूले नहीं हैं, प्रारम्भ में शोध के लिए सारा ध्यान फुटनोट अथवा पाद टिप्पणियों के अधिकाधिक उपयोग पर दिया जाता था।

लोकसाहित्य के किसी विषय पर शोध करने वालों के लिए यदि यह देखेंगे कि इसका प्रमाण क्या है तो पूछने वाले के बुद्धि-संस्कार पर भी अचरज होगा। उस विषय पर पहले कुछ भी नहीं लिखा गया तब ही तो शोधार्थी ने सर्वथा नया विषय लिया है।

क्या यह नहीं लगता कि संचार के साधनों के बेतहाशा विकास के कारण हर व्यक्ति होहल्ले की लपेट में अपनी पहचान देने की तड़प लिए है। अखबारों और पत्र-पत्रिकाओं की भूमिका भी हम नजर अन्दाज नहीं कर सकते।

यों पाठकों को आकर्षित करने के लिए भी कुछ न कुछ कहना आजकल एक फैशन हो गई है।

खुशी ने फहराया परचम

उदयपुर (का. सं.)। सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन (सीबीएसई) की ओर से 12वीं कक्षा के वाणिज्य संकाय परिणाम में दिल्ली पब्लिक स्कूल, जयपुर की छात्रा खुशी नाहर ने 97.2 प्रतिशक अंक प्राप्त कर स्कूल टॉप किया है।

खुशी ने बताया कि मैंने परिणामों के बारे में बिल्कुल चिंता नहीं की। मैं हमेशा पढ़ाई में नियमित रही हूं और कभी किसी तरह का दबाव नहीं लिया। मैंने तीनों तैयारियों को महत्व दिया, चाहे वह स्कूल हो, ट्यूशन हो या सेल्फ स्टडी। मैं अपने सभी शिक्षकों के साथ-साथ ट्यूशन सर और माता-पिता को उनके निरंतर समर्थन और मार्गदर्शन के लिए धन्यवाद देना चाहती हूं। खुशी के पिता लोकेश नाहर चोला मण्डलम फाइनेंस कंपनी में जोनल सेल्स मैनेजर हैं वहीं माता ममता नाहर कंपनी सेक्रेटरी होकर गृहिणी है। ये मूलत: उदयपुर के हैं।

'कला समय' का गुरु नानकदेव प्रकाश पर्व विशेषांक

(संपादक भंवरलाल श्रीवास को डॉ. महेन्द्र भानावत द्वारा लिखा पत्र)

श्रीमान्य श्रीवासजी,
सादर वन्दे

भोपाल से प्रकाशित 'कला समय' का श्री नानकदेवजी का 550वां प्रकाश पर्व विशेषांक अच्छी नई जानकारी से समृद्ध करता है।

मेरा कावड़ में गुरु नानकदेवजी का जीवन दर्शन लेख प्रकाशित कर कावड़ कला-शिल्पी मांगीलाल मिस्त्री का भी मान बढ़ाया है। डॉ. विभासिंह ने डॉ. धर्मवीर भारती को बड़ी आत्मीय संवेदनाओं से याद किया। उन्होंने ठीक ही लिखा, जब कोई श्रेष्ठ लिख रहा होता है तब हमारा उसकी ओर कोई ध्यान नहीं जाता और जब वह नहीं लिख रहा होता है तब उसे पुरस्कृत किया जाता है। ऐसा अक्सर होता है जब लेखक को पुरस्कृत करने के लिए उसे लंबी उम्र का इंतजार करते हुए जीना होता है।

इस आलेख को पढ़कर मुझे भारतीजी की अनेक यादें हो आईं। उन्होंने मुझे सर्वाधिक छापा और मैं भी चकित होता रहा कि जो धर्मयुग लोकसाहित्य संस्कृति कला का पत्र नहीं है वह मेरे लोकसम्मत भूतों, प्रेतों, दिव्यात्माओं के रहस्यजनित करतबों, करिश्मों को विशेष तरजीह उत्साह के साथ प्रकाशित कर रहा है।

याद पड़ता है जब सन् 1984 में महाराणा मेवाड़ फाउंडेशन द्वारा प्रदत्त पत्रकारिता का हल्दीघाटी पुरस्कार लेने भारतीजी उदयपुर आये थे। मुझे भी लोक वांग्मय क्षेत्र का महाराणा सज्जनसिंह पुरस्कार प्रदान किया गया जो पहलीबार शुरू किया गया था। इसी कड़ी में पं. जनार्दनराय नागर को ग्रामीण क्षेत्रों में समाज शिक्षण की अलख जगाने हेतु पुरस्कृत किया गया था। तब फाउंडेशन के संस्थापक भगवतसिंह मेवाड़ ने एक विशिष्ट कक्ष में हम सब से भावभीनी मुलाकात की थी।

भगवतसिंह मेवाड़ के साथ डॉ. भानावत, नागरजी, भारतीजी और उनकी सहधर्मिणी पुष्पा भारती तथा केशव पथिक।

दूसरे दिन मैं भारतीजी को लेकर हल्दीघाटी गया। शाहीबाग आदि स्थानों का भ्रमण कराने के बाद जब मैं युद्धस्थल पर ले गया तो भारतीजी बोले, भानावतजी, यहां मुझे कुछ अजीब सी अनुभूति हो रही है। तब मैंने कहा, यही वह स्थल है जिसे रक्त तलाई कहते हैं। युद्ध के दौरान हल्की बूंदाबांदी से यह स्थल रक्तवर्णी हो गया जिससे एक तलैया सा नजारा बन गया सो इसका रक्त तलाई नाम होगया।

यह सुनते ही भारतीजी ने अपने चप्पल खोल उस भूमि को दंडवत किया और कुछ धूली उठा कागज की पुड़िया बनाई। बंबई पहुंचने पर मुझे लिखा, जिस सरस्वती की मैं आराधना करता हूं उसके साथ हल्दीघाटी की उस माटी को भी पूज रहा हूं। उन्होंने मुझे यह भी कहा कि धर्मयुग अब घाटे में निकल रहा है किंतु वर्ष में रहस्य रोमांच, क्रिकेट तथा फिल्म विषयक तीन अंक निकाल हम पूरे वर्ष के घाटे की पूर्ति करते हैं।

इसी अंक में पं. विजयशंकर मिश्र का स्मृतिशेष सवितादेवी पर लिखा संस्मरण भी कई दृष्टियों से मन को स्पर्श कर गया। उनकी माता सिद्धेश्वरीदेवी ने ठुमरी घराने को विश्वस्तरीय गौरव-गुंजन दिया। वे उदयपुर की महाराणा कुंभा संगीत परिषद के एक समारोह में आई थीं तब लोककला मंडल में देवीलाल सामर और मैंने उन्हें आमंत्रित कर लोककला संग्रहालय दिखाते हुए अनेक चर्चाएं की थीं। वे विदुषी ही नहीं, ठुमरी संगीत की दिव्यात्मिक अनुभूतिपरक आध्यात्मिक चेतना की सात्विक विभूति भी लगीं। रामप्रकाश त्रिपाठी, नर्मदाप्रसाद उपाध्याय, डॉ. चरनजीत कौर, डॉ. योगिता तथा अन्यों की रचनाएं भी उल्लेखनीय हैं। इस सर्वथा संग्रहणीय अंक के लिए आपको बधाई।

चारवी की डॉक्टर बनने की ख्वाहिश

उदयपुर (का. सं.)। सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन (सीबीएसई) की ओर से 12वीं कक्षा के विज्ञान संकाय परिणाम में सेंट एंथोनी सीनियर सैकण्डरी स्कूल की छात्रा चारवी गोयल ने 93 प्रतिशक अंक प्राप्त किये हैं। चारवी ने बताया कि मैं इस परिणाम से खुश हूं। मैंने हमेशा पढ़ाई करने पर जोर दिया। भविष्य में मैं एमबीबीएस की पढ़ाई कर डॉक्टर बनना चाहती हूं। इस सफलता में माता-पिता एवं गुरुजनों का पूरा सहयोग मिला। चारवी के पिता देवकीनंदन गोयल पेसिफिक हॉस्पिटल, उमरड़ा में एकाउंट्स मैनेजर के पद पर कार्यरत हैं वहीं माता डॉ. ममता गोयल गृहिणी है।

राखी स्टोर लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। भाई-बहनों के लिए सबसे बहुप्रतीक्षित त्यौहार को मनाने के लिए अमेजन डॉट इन ने अपने 'राखी स्टोर' लॉन्च करने की घोषणा की। विशेषरूप से तैयार स्टोर राखी और फैशन, ब्यूटी, इलेक्ट्रॉनिक्स , होम डेकोर, किचन एप्लाइसेंस, एक्सेसरीज, गिफ्ट कार्ड और अन्य उत्पादों के लिए एक विस्तृत चयन की पेशकश करता है। अमेजन डॉट इन पर 'राखी स्टोर' उपभोत्क्ताओं को हजारों उत्पाद पहुंचायेगा। इसमें हैम्पर्स और कॉम्बो से लेकर पारंपरिक और डिजाइनर राखी, राखी गिफ्ट कार्ड, एक्सेसरीज, हैंडबैग्स, फ्रैगरेंसेस, वॉचेस, अपैरल, म्यूजिकल इंस्ट्रूफमेंट्स, कैमरा, स्मार्टफोन, फुटवियर, टॉयज, बोर्ड गेम्स, एसोर्टेड चॉकलेट्स, स्वीट्स, मनी ट्रांसफर और अन्य, शानदार उपहार विकल्पों में से चुनाव कर सकते हैं।

दक्ष को इंजीनियर बनने की चाह

उदयपुर (का. सं.)। सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन (सीबीएसई) की ओर से 12वीं कक्षा के विज्ञान संकाय परिणाम में सेंट एंथोनी वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय के छात्र दक्ष हिंगड़ ने 96.2 प्रतिशत अंक हासिल किए। दक्ष ने अपनी सफलता का श्रेय माता-पिता एवं गुरुजनों को दिया। दक्ष ने बताया कि उसका सपना आईआईटी परीक्षा में अच्छी रैंक प्राप्त कर इंजीनियर कॉलेज में दाखिला पाना है। इसके लिए वह नियमित ऑनलाइन क्लास के साथ तैयारी कर रहा है। दक्ष के पिता मुकेश हिंगड़ व्यवसायी और माता शुभा हिंगड़ गृहिणी है।

सेवानिवृत्ति के बाद जनदीप बने आत्मदीप

राजस्थान के श्री आत्मदीप ने नया इतिहास रच कर अन्य सूचना आयुक्तों के लिए अनुकरणीय मिसाल पेश की है। उन्होंने मध्यप्रदेश के राज्य सूचना आयुक्त के रूप में 2014 से 2019 तक जनता व शासन के हित में, देश में पहली बार न केवल अनेक नवाचार किए, बल्कि आरटीआई एक्ट के तहत की जाने वाली अपीलों व शिकायतों के आसान व त्वरित निराकरण का नया ट्रेंड भी सेट किया। सरकारी अधिकारियों और नागरिकों का समय व खर्च बचाने के लिए उन्होंने सूचना आयोग को उसकी चारदीवारी से बाहर निकाल कर जिलों में ले जाने का जतन किया।

जिलों में जाकर कैंप कोर्ट लगाए और अपीलों की सुनवाई जिलों में ही करके वहीं फैसले सुनाने शुरू किए। जिलों में जाकर लोक सूचना अधिकारियों, अपीलीय अधिकारियों व आरटीआई के क्रियान्वयन से जुड़े अन्य लोक सेवकों की कार्यशाला आयोजित कर उनकी व्यावहारिक दिक्कतें सुनीं और उनका निराकरण करते हुए जनता को अधिकारिक जानकारी देने के लिए अधिकारियों तथा कर्मचारियों को प्रेरित किया।

शिकायतों व अपीलों की सुनवाई के लिए नागरिकों व अधिकारियों कर्मचारियों को अपना कामकाज छोड़कर अपने गांव या नगर से भोपाल आने जाने की परेशानी ना उठानी पड़े और उनका रोजमर्रा का कामकाज प्रभावित ना हो, इसके लिए आत्मदीप ने म.प्र. सूचना आयोग में पहली बार वीडियो कांफ्रेंसिंग से भी सुनवाई का श्रीगणेश किया। साथ ही देश में पहली बार फोन पर ही सुनवाई कर अपील व शिकायतों का निपटारा करने की नई पहल की। सबसे हटकर खास बात यह कि सूचना आयुक्त के रूप में आत्मदीप ने सोशल मीडिया का भरपूर सदुपयोग करने का आगाज किया। उन्होंने फोन, फेसबुक, व्हाट्सएप, ईमेल, मैसेंजर, इंस्टाग्राम आदि के जरिए लोगों, अधिकारियों और कर्मचारियों के आरटीआई संबंधी सवालों के जवाब देने का और उन्हें मांगा गया परामर्श देने का सिलसिला शुरू किया।

सूचना आयुक्त पद पर अपना 5 साल का कार्यकाल श्रेयस्कर ढंग से पूरा करने के बाद भी, आत्मदीप ने यह जनहितकारी सिलसिला अब भी अनवरत जारी रखा है। घर बैठे आरटीआई संबंधी जानकारियां मुफ्त में हासिल करने के लिए देश-विदेश के हजारों लोग इस सुविधा का लगातार लाभ ले रहे हैं। एक और नई पहल करते हुए आत्मदीप ने सूचना आयुक्त के रूप में 'राइट टू इन्फार्मेशन (जर्नलिस्ट)' नाम से फेसबुक पेज भी शुरू किया। इस पेज पर कोई भी नागरिक व अधिकारी कर्मचारी आईटीआई संबंधी कोई भी जानकारी या सलाह निशुल्क प्राप्त कर सकता है। इस फेसबुक पेज को अमेरिका, कनाडा, ब्रिटेन, संयुक्त अरब अमीरात आदि देशों के और भारत के विभिन्न राज्यों के करीब साढ़े तीन हजार लोग नियमित रूप से फॉलो कर रहे हैं और उनकी संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। संभवत: देश में यह पहला अवसर है, जब कोई सूचना आयुक्त सेवानिवृत्त होने के बाद भी जनहित में अपनी सेवाएं नियमित रूप से व निशुल्क दे रहा है।

आत्मदीप ने पहली बार वीडियो कांफ्रेंसिंग से भी सुनवाई का श्रीगणेश किया। पहली बार फोन पर ही सुनवाई कर अपील व शिकायतों का निपटारा करने की नई पहल की। सोशल मीडिया का भरपूर सदुपयोग करने का आगाज किया। फोन, फेसबुक, व्हाट्सएप, ईमेल, मैसेंजर, इंस्टाग्राम आदि के जरिए लोगों, अधिकारियों और कर्मचारियों के आरटीआई संबंधी सवालों के जवाब देने का और उन्हें मांगा गया परामर्श देने का सिलसिला शुरू किया। संभवत: देश में यह पहला अवसर है, जब कोई सूचना आयुक्त सेवानिवृत्त होने के बाद भी जनहित में अपनी सेवाएं नियमित रूप से व निशुल्क दे रहा है।

उल्लेखनीय है कि श्री आत्मदीप ने उदयपुर के एसबीएसएच (एमबी कॉलेज) से ग्रेजुएशन किया। वे उदयपुर में कॉलेज और हॉस्टल में विभिन्न पदों पर रहने के साथ उदयपुर विश्वविद्यालय की छात्र प्राध्यापक संयुक्त परामर्शदात्री समिति (सीनेट) के सदस्य भी रहे। हॉस्टल से भित्ति समाचार पत्रिका 'गुंजन' निकाली और नई दिल्ली से प्रकाशित पत्रिका 'जाह्नवी' के उदयपुर विश्वविद्यालय संवाददाता भी रहे। श्री आत्मदीप राजस्थान और मध्यप्रदेश में 40 सालों तक पूर्णकालिक पत्रकार रहे। कोटा में राजस्थान पत्रिका और उदयपुर में नवभारत टाइम्स के कार्यालय संवाददाता रहने के बाद 25 वर्षों तक जयपुर और उसके बाद भोपाल में जनसत्ता के विशेष संवाददाता रहे। किसी भी तरह के प्रलोभन में न आना और एक्सक्लूसिव स्टोरीज करना उनकी खासियत रही। उत्कृष्ट, रचनात्मक व खोजपूर्ण पत्रकारिता के लिए उन्हें राज्य के श्रेष्ठ पत्रकार के रूप में 'माणक अलंकरण' तथा जगद्गुरु शंकराचार्य वासुदेवानंद सरस्वती ने 'गुणीजन सम्मान' से अलंकृत किया। वे पत्रकारों के श्रम आंदोलन के क्षेत्र में भी तीन दशक तक सक्रिय रहे। उन्होंने इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ जर्नलिस्ट्स (आईएफजे) द्वारा विभिन्न देशों में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय कार्यशालाओं में भारत का प्रतिनिधित्व किया। जनसत्ता से रिटायर होने के बाद वे मध्यप्रदेश में राज्य सूचना आयुक्त बने। वे जार के प्रदेश अध्यक्ष भी रहे।

- विदिशा से दीपक तिवारी

खोज-खबर

सवा पांच हजार पृष्ठों का उपन्यास

साहित्य कला और संस्कृति के क्षेत्र में मेवाड़ का योगदान अप्रतिम रहा है। इस भूमि ने एक से बढ़कर एक महत्वपूर्ण कृतियां और कृतिकार दिये हैं। इनमें सर्वाधिक महत्वपूर्ण कर्नल टाड लिखित

एनाल्स एण्ड एन्टीक्वीटीज ऑफ राजस्थान, दयानंद सरस्वती का सत्यार्थ प्रकाश और कविराजा श्यामलदास का वीर विनोद ऐतिहासिक महत्त्व ग्रंथ हैं। डॉ. महेन्द्र भानावत ने नागरजी के हवाले से पुरानी यादें उघाड़ते बताया।

कहते हैं पं. जनार्दनराय नागर लिखित जगद्गुरु शंकराचार्य भी इसी कोटि का सवा पांच हजार पृष्ठों का उपन्यास है जिसे 16 अप्रेल 1984 को पूरा करने में नागरजी को 13 वर्ष 4 माह लगे।

दस भागों में लिखा यह उपन्यास परम सत्य को जानने की भारतीय चेतना का मनोमंथन है। डॉ. दौलतसिंह कोठारी ने इस उपन्यास के रूप में शंकराचार्य का अवतरण कहा है।

आज जब बड़े ग्रंथों के जेबी संस्करण और जेबी पुस्तकों का प्रकाशन चल पड़ा है ऐसी स्थिति में इतने वृहदाकार उपन्यास की रचना सार्थकता के सम्बंध में पूछने पर पं. नागर ने बताया कि इसमें कोई लेखक नहीं है।

मैं तो मात्र माध्यम बना हूं। जगदम्बा ने लिखवाया सो मैंने लिख दिया। मेरी दृष्टि में यह पहला दार्शनिक उपन्यास है जिसमें जीवात्मा की तीर्थयात्रा है। इस उपन्यास में मनुष्य ही मूल धूरि है जो जगत का कल्याण कर सकती है। कोई सुर-असुर, किन्नर आदि नहीं। इसकी समस्या शाश्वत भारत की समस्या है।

ऐसी बात नहीं है कि पंडित जनार्दनराय नागर ने पहले कोई उपन्यास नहीं लिखे हों। उपन्यास सम्राट प्रेमचंदजी के 'रंगभूमि' उपन्यास से प्रेरित हो स्वदेश सेवा उपन्यास लिखा तब तत्कालीन मेवाड़ महाराणा भूपालसिंहजी ने ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ यह उपन्यास मंगवाया।

नागरजी ने तब रात को कमरा बंद कर उस उपन्यास के पन्द्रह-बीस अध्याय जला दिये और उनकी बजाय उस एक ही रात में दूसरा लिखा महाराणा को वह उपन्यास दिखाया जिसमें उन्होंने वैसा कुछ नहीं पाया जैसा सुना गया पर वे यह अवश्य भांप गये कि जनार्दन करामाती है। अत: इनके नाना को 25 हजार का चैक दिया और उन्हें पढ़ाई के लिए लंदन भेजन को कहा। यह बात सन् 1930 की है।

इस उपन्यास को बाद में नागरजी ने प्रेमचंदजी को भेजा। उन्हीं दिनों एक सज्जन लखनऊ में जनार्दनराय नागर बनकर प्रेमचंदजी से मिले और उनका अनुवाद अपने नाम में छपवा दिया। जब नागरजी को पता चला तो उन्होंने प्रेमचंदजी को सारी स्थिति से अवगत कराया तब प्रेमचंदजी ने अफसोस जाहिर करते हुए लिखा- 'साहित्य के नाम पर यह बड़ा धोखा है। तुम मुकदमा करो, मैं गवाही दूंगा।'

बनारस में पढ़ते समय भी नागरजी ने लीलू अंजरिया नामक उपन्यास शुरू किया और उसे पूर्ण किये बिना ही गंगा में डूब मरने का निश्चय किया तब प्रेमचंदजी ने कहा था- 'तुम्हारे द्वन्द्व मैं जानता हूं परन्तु लीलू को पूरा करो। मैं उसी के लिए जिन्दा हूं।' यह उपन्यास अब तक अधूरा है।

नागरजी ने बताया कि शंकराचार्य लिखने के बाद मुझे लगा कि अब मेरे लिए कुछ लिखना शेष नहीं है। जितना जगत को देखा समझा उतना ही मृत्यु का भय लग रहा है।

आज के वैज्ञानिक भूतकाल को जानते हैं। मैंने इस उपन्यास से चिन्दाकाश को समझा है। आगे कुछ लिखने की बात पूछने पर नागरजी बोले- 'जगदम्बा ने जिन्दा रखा तो हनुमान को चरित नायक बनाकर रामराज्य पर उपन्यास लिखने की सोच रहा हूं। अभी अपनी मां स्व. विजय मां पर उपन्यास शुरू किया है- पृथ्वी अंतरिक्ष नाम से। जगद्गुरु शंकराचार्य के दो भाग प्रकाशित हो चुके हैं।'

यह बड़ा अचरज ही कहा जाएगा कि साहित्य, शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान के फलस्वरूप नागरजी राष्ट्रीय अलंकरण से कैसे अब तक अनलंकृत रह गये?

उनका विद्यापीठ विश्वविद्यालयीय शिक्षा-दीक्षा का अभिनव प्रयोग कहा जा सकता है। नागरजी भारतीय शिक्षा मनीषी के मेरु मनीषी हैं। आने वाला समय इस पहचान को दस्तावेज देगा।

- शब्द रंजन टीम

बी-एसयूवी का नाम 'निसान मैग्नाइट'

उदयपुर (विज्ञप्ति)। निसान इंडिया ने अपनी बहुप्रतीक्षित बी-एसयूवी का नाम निसान मैग्नाइट दिया गया है। तकनीक से भरपूर और स्टाइलिश बी-एसयूवी को भारत में वित्त वर्ष 2020 में लॉन्च किया जाएगा। मैग्नाइट शब्द को 'मैग्नेटिक' और 'इग्नाइट' इन दो शब्दों के मेल से बनाया गया है।

निसान मोटर इंडिया के प्रबंध निदेशक, राकेश श्रीवास्तव ने कहा कि निसान मैग्नाइट से निसान के वैश्विक एसयूवी डीएनए ने नई ऊंचाई हासिल की है। अत्याधुनिक तकनीक के साथ यह अपनी श्रेणी में एक गेम-चेंजर साबित होगी। चार-मीटर से कम की श्रेणी में इस तरह की विशेषताओं को पेश करने के बाद हमें पूरा विश्वास है कि निसान मैगनाइट उद्योग की बी-एसयूवी श्रेणी को फिर से परिभाषित करेगी। निसान मैग्नाइट को 'मेक इन इंडिया, मेक फॉर द वर्ल्ड' की सोच के साथ बनाया गया है और इसे भारतीय ग्राहकों की आवश्यकताओं व आकांक्षाओं को ध्यान में रखते हुए जापान में डिज़ाइन किया गया है।

भारत की पहली 6-सीटर इंटरनेट एसयूवी हेक्टर प्लस लॉन्च

उदयपुर (विज्ञप्ति)। एमजी (मॉरिस गैराज) मोटर इंडिया ने 13.48 लाख रुपए (एक्स-शोरूम, नई दिल्ली) के शुरुआती मूल्य पर

बहुप्रतीक्षित एमजी हेक्टर प्लस लॉन्च की है। हेक्टर प्लस भारत की पहली 6-सीटर इंटरनेट एसयूवी है जो पैनोरमिक सनरूफ के साथ आती है। इसका निर्माण एमजी मोटर के गुजरात में वड़ोदरा के पास हलोल में स्थित स्टेट-ऑफ-द-आर्ट मैन्यूफेक्चरिंग फेसिलिटी में किया जाएगा।

एमजी मोटर इंडिया के अध्यक्ष और प्रबंध निदेशक राजीव चाबा ने कहा कि 6-सीटर हेक्टर प्लस में बीच की पंक्ति में शानदार और आरामदेह कैप्टन सीट्स दी गई है और बिल्कुल नए डुअल-टोन स्मोक्ड सेपिया ब्राउन इंटीरियर की वजह से अंदर से बेहद अपील करने वाले लुक्स देती है। इसके अलावा नए स्टाइलिश हेडलैम्प्स, नया क्रोम-स्टडेड फ्रंट ग्रिल और आई-स्मार्ट नेक्स्ट जेन इंटरफेस पर चिट-चैट फीचर इसका आकर्षण बढ़ा रहे हैं।

यह अन्य आकर्षक फीचर्स के साथ भी आता है जिसमें लेटेस्ट स्मार्ट स्वाइप, फ्रंट और रियर बम्पर, न्यू रियर टेल लाइट डिजाइन और रिवाइज्ड स्किड प्लेट्स भी हैं। कार निर्माता ने 13 अगस्त तक शुरुआती कीमत तय की है। इसके बाद कीमत 50,000 रुपए तक बढ़ जाएगी।

किसानों को हुई 25.38 लाख की आय

उदयपुर / डूंगरपुर (विज्ञप्ति)। कोरोना ने देशभर के लाखों किसानों की रोजी रोटी को बुरी तरह से प्रभावित किया है।

ऐसे में डीएस ग्रुप के 'पहल' प्रोजेक्ट से लाभ उठाकर डूंगरपुर जिले के 100 किसानों ने एक वर्ष में 1,03,580 किलो सब्जियों का उत्पादन किया और 70,350 किलो सब्जियों का विक्रय कर 25.38 लाख रूपयों की अतिरिक्त आय अर्जित की। डीएस ग्रुप द्वारा सामाजिक उत्थान के लिए शुरू किए गये 'पहल' प्रोजेक्ट में इन 100 किसानों को वाड़ी विकसित करने हेतु प्रशिक्षित किया गया जो कि आदिवासी ग्रामीण अंचल के लिए वरदान साबित हो रहा है। 'पहल' प्रोजक्ट किसानों को कम जमीन से कई प्रकार की फसल जैसे जमीन के अंदर एवं ऊपर उगने वाली सब्जियां, बेल वाली सब्जियां एवं सीजनल फल आदि उगाने हेतु प्रेरित कर रहा है। इस मोनोकल्चर विधि द्वारा कम जमीन में अधिक उपज ली जा सकती है।

विद्यापीठ के कुलपति सारंगदेवोत सम्मानित

उदयपुर (विज्ञप्ति)। यूनी रेंक द्वारा देशभर के विश्वविद्यालयों द्वारा किये जा रहे कार्यों को लेकर किये गये सर्वे में जनार्दनराय नागर राजस्थान विद्यापीठ डीम्ड टू बी विश्वविद्यालय उदयपुर का विश्व के 30 हजार विश्वविद्यालयों में 5032वां, भारत में 142 वां, राजस्थान में 7वां तथा उदयपुर में पहला स्थान आने पर कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत का शहर के सामाजिक, राजनीतिक, एल्यूमिनाई तथा विद्यापीठ की संघटक इकाइयों के कार्यकर्ताओं ने पगडी तथा उपरणा पहनाकर सम्मान किया।

प्रो. सारंगदेवोत ने कहा कि सन् 1937 में संस्थापक मनीषी पं. जनार्दनराय नागर द्वारा वंचित एवं आदिवासी वर्ग को शिक्षा से जोड़ने के उद्देश्य से पांच कार्यकर्ताओं एवं तीन रूपयों से शुरू की गई विद्यापीठ को 1987 में डीम्ड विश्वविद्यालय का दर्जा दिया गया। यह सब विद्यापीठ के निष्ठावान एवं समर्पित कार्यकर्ताओं की बदौलत हुआ है। संस्थापक जनुभाई कहा करते थे सौ पेड़ लगाना आसान है लेकिन एक कार्यकर्ता तैयार करना बहुत मुश्किल है।

सम्मान के इस क्रम में नई पहल एज्यूकेशन ट्रस्ट, जिब्र न्यूज आगरा की ओर से संस्था के उपाध्यक्ष आरीफ मोहम्मद, ट्रस्टी रियाज हुसैन, आशीष नन्दवाना, डॉ. दिलीपसिंह चौहान ने भी उपरणा ओढ़ा प्रमाण पत्र प्रदान कर प्रो. सारंगदेवोत का सम्मान किया। प्रो. सारंगदेवोत ने बताया कि विद्यापीठ के होम्योपेथी चिकित्सा महाविद्यालय की टीम द्वारा लॉकडाउन के दौरान उदयपुर, राजसमंद व ग्रामीण इलाकों में शिविर लगाकर 65 हजार से अधिक ह्युमिनिटि बढ़ाने की आर्सेनिक एल्ब 30 होम्योपेथी दवा, मास्क का वितरण किया गया।

जितेन्द्रकुमार दादू ज़िंक की प्रबंधन समिति में

उदयपुर (विज्ञप्ति)। विश्व स्तर पर काम करने वाली भारत की सबसे बड़ी डायवर्सिफाइड प्राकृतिक संसाधन कंपनी वेदांता ने वरिष्ठ स्तर पर दो नियुक्तियों की घोषणा की है। ये नियुक्तियां कोविड के बाद अगले चरण की वृद्धि हेतु तैयारियों का हिस्सा है। भारत के कुल आयात का 50 प्रतिशत से अधिक प्राकृतिक संसाधन क्षेत्र में होता है।

गौरतलब है कि जितेन्द्रकुमार दादू दिसंबर 2017 में भारत सरकार से सचिव की रैंक पर रिटायर हुए हैं। उन्हें वरिष्ठ सलाहकार के तौर पर नियुक्त किया गया है। श्री दादू वेदांता के जिस परामर्शक बोर्ड में शामिल हुए हैं उसमें पूर्व विदेश सचिव रंजन मथाई, पूर्व आर्थिक मामले सचिव आर गोपालन और पूर्व पैट्रोलियम व प्राकृतिक गैस सचिव सौरभ चंद्रा शामिल हैं। इनके साथ ही स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड के पूर्व चेयरमैन व प्रबंध निदेशक प्रकाशकुमारसिंह वेदांता की इलेक्ट्रोस्टील स्टील्स लिमिटेड (ईएसएल) के प्रेसिडेंट-ग्रोथ प्रोजेक्ट्स के पद पर नियुक्त हुए हैं। वे कंपनी की मार्केटिंग, नीति और वृद्धि में अहम भूमिका निभाएंगे।

दोनों नियुक्तियों पर वेदांता के सीईओ सुनील दुग्गल ने कहा कि हमारे परामर्शक बोर्ड में श्री दादू और श्री सिंह के शामिल होने पर उनके व्यापक अनुभव और ज्ञान से हमें अधिकाधिक लाभ मिलेगा।

चेहरे में झटके आने व दर्द की बीमारी का उपचार

उदयपुर (विज्ञप्ति)। पारस जे. के. हॉस्पिटल में चिकित्सकों ने चेहरे मे झटके आने व दर्द होने की अनोखी बीमारी का उपचार कर मरीज को राहत दी है। पारस जे.के. हॉस्पिटल के फैसेलिटी डायरेक्टर विश्वजीत कुमार ने बताया कि जगदीश पालीवाल को चेहरे मे झटके आने व दर्द होने की अनोखी बीमारी हो गई। जगदीश ने कई अस्पतालों में दिखाया पर कोई फर्क नहीं पड़ा। एक रिश्तेदार के कहने पर पारस जे.के. हॉस्पिटल के न्यरोसर्जरी रोग विशेषज्ञ डॉ. अमितेंदु शेखर को दिखाया।

डॉ. अमितेंदु ने बताया कि मरीज को चेहरे में दर्द व झटके आने के साथ पेस्ट करने, दाढ़ी बनाने, चबाने आदि में तकलीफ थी। इन सारी बातों को ध्यान में रखकर सीटी स्केन करवाया जिसमें पता चला कि कान के पीछे वाले हिस्से जिसे आम बोलचाल में छोटा दिमाग भी कहते हैं, में खून की नली दिमाग की नस (ट्राईजूमिनल) को दबा रही है जिससे यह समस्या हो रही है। डॉ. अमितेंदु ने बताया कि हमने स्पंज डालने वाले ऑपरेशन को चुन लेप्रोस्कोपी तकनीक से ऑपरेशन किया। इसके लिए कान के पीछे छोटा छेद कर दूरबीन की सहायता से मरीज की खून की नली व दिमाग की नस के बीच में स्पंज रख दिया। 24 घंटे में ऑपरेशन के परिणाम सामने आने लगे और मरीज अपने सभी कार्य कुशलता से करने लगा। धीरे-धीरे उसका दर्द गायब हो गया। मरीज को दो दिन बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई। इस दौरान उसने अपने सभी दैनिक कार्य बिना किसी तकलीफ के किये।

प्रो. चूण्डावत स्टेहाएका के उपाध्यक्ष नियुक्त

उदयपुर (विज्ञप्ति)। राज्य सरकार ने उदयपुर के प्रो. दरियावसिंह चूण्डावत को

राजस्थान स्टेट हायर एजुकेशन काउंसिल का उपाध्यक्ष नियुक्त किया है।

प्रो. चूण्डावत ने बताया कि काउंसिल उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विश्वविद्यालय व महाविद्यालय में शिक्षा को प्रशासनिक व वित्तीय रूप से मजबूत करने का काम करती है। वे सभी विश्वविद्यालय में प्रशासनिक व एचआरडी मंत्रालय से समन्वय रखते हुए वित्तीय क्षेत्र में रूसा के माध्यम से अधिक से अधिक लाभ दिलाने का प्रयास करेंगे।

तीजनबाई पंडवानी....

(पृष्ठ दो का शेष)

भागते समय कुछ नहीं सोचा था कि क्या करूंगी पर जैसे मेरा भाग्य वहां भगाये ले जा रहा था। रास्ते में मैं अपना गीत रचती और दुहराती जा रही थी। मैं जब वहां पहुंची तो कुछ लोग मेरा गाना सुनकर आकृष्ट हुए क्योंकि इससे पहले किसी स्त्री की पंडवानी प्रस्तुति किसी ने नहीं देखी-सुनी थी।

उस कस्बेनुमा गांव के लोगों ने सबसे पहले मेरा कार्यक्रम रखा। मेरा पहला कार्यक्रम चार घण्टे तक चला। पहले दिन का कार्यक्रम लोगों को इतना पसन्द आया कि दूसरे दिन आसपास के गांव के लोग भी आये। इस तरह भीड़ बढ़ती गई और लगातार 18 दिन तक मेरा कार्यक्रम चलता रहा।

प्रश्न - आप अपनी कविता मौखिक रूप से रचती हैं और याद रखती हैं तो क्या हर बार प्रस्तुति में वही गीत हू-ब-हू आपको याद रहता है या हर बार आप नया गीत रचती हैं आशुकवि की तरह ?

तीजन - मेरी प्रत्येक प्रस्तुति में गीत के बोल प्राय: बदल जाते हैं। कथा वही रहती है। कविता में ही मेरे अभिनय के सारे संवाद होते हैं। मुझे लगता है कि मां सरस्वती मेरी जीभ पर बैठकर बोलने लगती हैं। मुझे स्वयं आश्चर्य होता है कि मैं एक अनपढ़, विद्वानों की सभा में कैसे इतना कुछ कह जाती हूं।

प्रश्न - आपको देखकर अन्य महिलाओं को भी पंडवानी गायन की प्ररेणा मिली होगी। ऐसी कितनी महिलाएं हैं जो इस क्षेत्र में कार्य कर रही हैं ?

तीजन - लगभग 80-90 महिलायें इससे इस समय जुड़ी हुई हैं।

प्रश्न - आपकी कुछ शिष्याएं होंगी? उनके नाम बताइये।

तीजन - इसका उत्तर दिया जीतनबाई के पति श्री तुलसीराम देशमुख ने। वे बोले, ऋतु वर्मा इस क्षेत्र में आगे आई। उन्होंने वेदमती शैली सीखी है। मीना साहू, सुशीला ठाकुर, रंभाबाई, चइतीबाई साहू, उषा बरले आदि इनके गीत गाती हैं और वेदमती शैली से भी लेती हैं।

तीजनबाई ने अपने पति का परिचय कराया। मैंने प्रश्न किया, उनके पति से ही कि आपका विवाह इनसे कब हुआ ?

तुलसीराम ने हंसते हुए कहा, घटना भी बड़ी चमत्कारी है। मैं इनके साथ कार्यक्रमों में हारमोनियम बजाया करता था। 24 कलाकारों की हमारी संस्था है। मैं इनसे बहुत डरता था। चुपचाप हारमोनियम बजाता था।

कभी इनसे बोलता नहीं था लेकिन देखता था कि जब पति-पत्नी का जोड़ा इनकी आंखों के सामने से गुजरता तो इनकी आंखों में आंसू गिरने लगते थे। शायद इन्हें अपने बाल-विवाह के बन्धन टूट जाने का गहरा दु:ख था।

एकबार मैं इनके साथ इलाहाबाद कार्यक्रम देने गया। संगम के बीच नाव पर हम लोग पूजा कर रहे थे। मैं इनके सामने बैठा था, बाकी लोग पीछे। जो पंडा पूजन करा रहे थे, अचानक उन्होंने मुझसे कहा कि इनकी मांग में सिन्दूर डाल दो।

मैं एकदम घबरा गया कि कहीं क्रोध में आकर ये मुझे जमुना या संगम में फैंक न दे। मैंने इनकी ओर देखा। इनकी आंखों से अश्रुधारा बह रही थी। बस अचानक मैंने पंडा का सिन्दूर उठाया और इनकी मांग में भर दिया। तब से हम लोग सुखी वैवाहिक जीवन बिता रहे हैं। हमारे चार बच्चे हैं। सबसे बड़ा पुत्र चौदह साल का है।

तुलसीरामजी आगे हंसते हुए बताते हैं कि इलाहाबाद जितनी बार इनके साथ गया नई घटना घटी। पहलीबार गया तो विवाह हुआ। दूसरी बार पहुचते ही पता लगा कि इन्हें पद्मश्री की उपाधि मिली।

तीसरी बार गया तो इलाहाबाद में बम विस्फोट हुआ और चौथी बार जब हम लोग गये तो रास्ते में ही ट्रेन का एक्सीडेंट हो गया। हम लोग सबसे पिछले डिब्बे में थे। उसके आगे के छह डिब्बे पटरी से उतर गये थे लेकिन प्रभु की कृपा से कोई हताहत नहीं हुआ।

प्रश्न - तीजनजी आपका नाम किसने रखा ?

तीजन - मेरी मां ने मेरा नाम तीजन रखा था क्योंकि में हरतालिका तीज के दिन पैदा हुई थी। इस दिन शिव-पार्वती का मिलन होता है। इसलिए मां ने तीजन नाम दिया।

प्रश्न - आपके किसी बच्चे में पंडवानी गायन का शौक है कि नहीं ?

तीजन - सबसे छोटे बच्चे में लोकगीतों के गायन का शौक है। वही शायद इससे भी जुड़े। बाकी बच्चे पढ़ रहे हैं।

प्रश्न - सुना है कि आप नौ किलो चांदी पहनकार स्टेज पर नाचती हैं, क्या यह सच है ? अतिथि श्री दिनेश श्रीवास्तव द्वारा।

तीजन - जी हां, पहले तो मैं 15 किलो चांदी पहनकर नाचती थी। अब कुछ गहने बनावटी चांदी के पहन कर नाचती हूं।

प्रश्न - आप इन कार्यक्रमों के अतिरिक्त और क्या करती हैं ?

तीजन - मैं भिलाई स्टील प्लांट में कर्मचारी हूं।

प्रश्न - पंडवानी के अतिरिक्त आप छत्तीसगढ़ के अन्य लोकगीतों में रूचि रखती हैं या नहीं ?

तीजन - पहले मैं कर्मा, ददरिया लोकगीत भी गाती थी। छत्तीसगढ़ में ददरिया को गीतों की रानी कहा जाता था। अभी भी गाती हूं पर अब तो पंडवानी मेरे रोम-रोम में रच-बस गई है।

(तीजनबाई को अन्यत्र कहीं जाना था अत: वार्ता को विराम देना पड़ा। वहां बैठे अन्य जनों ने कहा, क्या आप थोड़ा सा पंडवानी का नमूना दिखा सकती हैं। इस पर वे मुस्करा कर बोली- अवश्य लेकिन यदि मैंने शुरू कर दिया तो फिर मुझे समय का ध्यान नहीं रहेगा और जहां जाना है वहां देर हो जायेगी। इसलिए अब चलने दीजिए। फिर कभी भेंट होगी।)

घाट-घाट के तीर्थ.....

(पृष्ठ तीन का शेष)

अपने बचपन का मेरा भी यह सटीक अनुभव रहा है जब अपने गांव कानोड़ के रावले में रम रही गवरी में मां ने मुझे बीमारी की हालत में उस शेर के नीचे से निकाला और मैं स्वस्थ हो गया।

कर्णवास में महन्त मोहनानन्द ने तीनों काल जप-तप, पूजा-आराधना की। वह दिन आश्विन शुक्ला पंचमी का था। सायं पांच बजे उन्हें पहले एक पुरूष दिखाई दिया जिसे वे भूत ही अधिक समझ बैठे।

कुछ ही देर बाद उसके साथ एक महिला दिखाई दी। दोनों बीतचीत में खोये हुए थे। पुरूष की बैठणी चार फीट की थी जबकि स्त्री का कद ठिंगना था। पुरूष धोती पहने था। सिर पर चोटी थी। उसके हाथ के नाखून ही दो इंच बड़े थे। मोहनानन्द गायत्री का जाप करने में लीन थे।

अचानचक दंडीस्वामी मोहनानन्द को लगा कि वे कोई पहुंचे हुए स्त्री-पुरूष हैं। तभी उन्हें उनमें शिव-पार्वती का स्वरूप दिखाई दिया। उनका ध्यान टूट गया। वे सोच रहे थे कि यदि वे शिव-पार्वती हैं तो उन्हें सर्प-दर्शन हो। यह एक प्रकार का विचार-संकल्प था। यदि उन्हें सर्प-दर्शन हो गये तो वे यह मान बैठेंगे कि वे दोनों शिव-पार्वती हैं। वे उठे तब तक शिव-पार्वती के दिव्य-दर्शन ओझल हो चुके थे लेकिन तब ही उन्हें एक बड़ा मोटा सर्प दिखाई दिया जो उनके नजदीक आकर पांवों को स्पर्श देता निकल गया।

बद्रीनारायण में पत्नी-बिछोह से क्लान्त मोहनानन्द का मन शान्त हुआ। यहां रात्रि को जब वे चट्टान पर सोये हुए थे, एक साधु मिला। उन्हें उठाया गया। दोनों एक दुकान पर जाकर सोये। सुबह उठे तो उन्होंने अपने को अकेला पाया। कुछ समय बाद वही साधु उन्हें फिर मिल गया।

उसने बताया कि वह भी राजस्थान का उनके उधर का ही है, चित्तौड़ के पास चंदेरिया का। दोनों मेवाड़ी में बातें करने लगे। भगवाधारी वह साधु बोला कि चित्तौड़ पर अकबर बादशाह ने आक्रमण किया और किले को चारों ओर से घेर लिया। ऊपर किले पर चढ़ने का कोई रास्ता नहीं बचा तो उसने सैकड़ों मजदूरों को बुलवाकर पत्थर-मिट्टी की एक बड़ी ऊंची मगरी तैयार करवाई।

मजदूरों को एक-एक तगारी डालने का मेहनताना एक-एक मोहर दी गई। वह स्वयं भी मजदूरों में सम्मिलित था। प्रारंभ के दिनों में एक टोकरी की एक मुहर पाने के कारण असंख्य मजदूर उलट पड़े लेकिन बाद में घटना यह घटी कि संध्या के वक्त मजदूर मिट्टी डालकर निकलता कि धोखे से उसका सिर कलम कर दिया जाता। ऐसे तब के कई जीव वहां अकाल मृत्यु को प्राप्त हुए जो अब भी वहीं भटक रहे हैं। मोहर देने के कारण वह मगरी मोहर मगरी के नाम से प्रसिद्ध हुई। आज भी उसका यही नाम प्रचलन में है। तब उस साधु की उम्र अठारह वर्ष थी लेकिन बद्रीनारायण में जिस रूप में वह देखा गया, उसकी उम्र पचास से अधिक नहीं लग रही थी।

रखेश्वर में एक साधु ऐसा मिला जिसका एक पांव ऊंट का था। दीवाली के एक दिन पूर्व रूप चतुर्दशी को वह देखा गया। देखते-देखते उसने अपना चींपिया जमीन पर खड़ा किया तो पास के तंबू में आग लग गई। लोगों ने बताया कि वह ऊंटपगा साधु कभीक नजर आता है। करीब हजार वर्ष उसकी उम्र कही जाती है।

ऐसे अनुभवों के खजाने थे मोहनानन्द। उदयपुर आश्रम उन्हें छोड़ने नहीं दिया गया किंतु उनका मन सदैव चरैवेति बना रहा। कहते हैं, जैसे नदी बहती हुई अच्छी लगती है वैसे साधु भी चलता हुआ अच्छा लगता है। स्थिर नदी कई विसंगतियों से घिर जाती है। साधु भी स्थिरवास से मनोनुकूल नहीं रह पाता है। मोहनानन्द की भी यही स्थिति बनी रही।

कहना नहीं होगा कि 20 मई 2018 को 96 वर्ष की उम्र में महंत मोहनानंदजी का निधन हो गया। उनकी लिखी वसीयत के अनुसार मंदिर परिसर में ही उन्हें समाधि दी गई और लगभग 50 संत-महंतों की उपस्थिति में योगेश्वर आमेटा को नया महंत बनाया गया।

ताबीश की चिकित्सक बनने की तमन्ना

उदयपुर (का. सं.)। राजस्थान माध्यमिक शिक्षा बोर्ड के 12वीं के परिणाम में एसेंट इंटरनेशनल सीनियर सैकण्डरी स्कूल के विज्ञान वर्ग के छात्र मोहम्मद ताबीश शेख ने 90.4 प्रतिशत अंक प्राप्त किये। ताबीश ने अपनी सफलता का श्रेय कड़ी मेहनत, माता-पिता एवं गुरुओं को दिया। ताबीश भविष्य में चिकित्सक बनना चाहता है और उसके लिए नीट परीक्षा की तैयारी कर रहा है। ताबीश के पिता मोहम्मद तस्कीन शेख शिक्षा विभाग, उदयपुर में हॉकी के प्रशिक्षक, माता काजेमा शेख दी उदयपुर अरबन कॉपरेटिव बैंक, उदयपुर में मैनेजर और बहिन कारोफा तस्कीन शेख महाराष्ट्र कोल्हापुर के जीएमसी में एमबीबीएस द्वितीय वर्ष में अध्ययनरत है। उल्लेखनीय है कि ताबीश ने कक्षा दसवीं में भी 94 प्रतिशत अंक हासिल किये थे।

आरजू की डॉक्टर बनने की ख्वाहिश

उदयपुर (का. सं.)। सेन्ट्रल बोर्ड ऑफ सैकण्डरी एजुकेशन (सीबीएसई) की ओर से 10वीं कक्षा के परिणाम में सेंट्रल पब्लिक स्कूल (सीपीएस) की छात्रा आरजू स्वामी ने 97.2 प्रतिशत अंक प्राप्त कर संभाग की टॉप श्रेणी में अपना नाम अंकित किया है।

आरजू ने बताया कि मैंने कभी परिणाम की चिन्ता नहीं की। हमेशा कर्म पर विश्वास किया। निरंतर अध्ययन व निश्चित लक्ष्य से परिणाम खुशनुमा रहा। मेरी सफलता में माता-पिता एवं गुरुजनों का पूर्ण सहयोग रहा।

आरजू की इस उपलब्धि पर पिता-माता धर्मपाल-तुलसी, दादा-दादी काशीराम-सोनादेवी, नाना अर्जुनदास, बड़े पिता-माता महेन्द्र-संजू, बहिन वन्दना, निशा, वान्या, अनुष्का, भाई कबीर तथा हेमन्त ने बधाई और आशीर्वाद प्रदान किया है।

विवाह के विविध संस्कार एवं रीति प्रसंग (6)

पिछले अंक में राजस्थान में प्रचलित विवाह सम्बन्धी विविध संस्कारों एवं लोकाचारों के संबंध में जानकारी प्रस्तुत की गई थी। यहां पढ़िये उससे आगे-

(35) फेरे फरना :

फेरे फरने से तात्पर्य मंडप में वैवाहिक जीवन में बंधने हेतु होम (यज्ञ) की परिक्रमा करने से है। अग्नि की साक्षी में पंडित विवाह विधि सम्पन्न कराता है। यह परिक्रमा सात बार की जाती है। प्रथम तीन में वधू आगे

रहती है जो धर्म अर्थ काम की प्रतीक है किंतु चौथे मोक्ष मार्ग में पति को ही आगे रहना होता है। सात फेरों को सप्तपरी भी कहते हैं।

तीन फेरे पूर्ण कर ही वधू वर के बांई ओर बैठने की अधिकारी होती है। दायां और बायां दोनों भाग श्रेष्ठ हैं पर अधिकतर काम दायां हाथ करता है सो वही श्रेष्ठ है। लेकिन ऐसा नहीं है। श्रेष्ठ अंग बायां ही है कारण कि इसी भाग में हृदय होता है। वधू को बांई ओर बिठाने से तात्पर्य उसे वर ने अपने हृदय में स्थान दे दिया है।

(36) मांग भराई :

चौथे फेरे के बाद वर-वधू के आसन ग्रहण करने पर कन्या पक्ष द्वारा वर को सरोपाव स्वरूप पाग (पगड़ी) धारण कराई जाती है। वधू को उसकी सहेल्यां पूंछा चूड़ी आदि धारण कराती हैं। इसी क्रम में वर सिंदूर, कुम्कुम् अथवा चांदी के सिक्के या अंगूठी द्वारा वधू की मांग भराई करता है।

सात फेरे में लिए सात वचन इस बात के सूचक हैं कि वर-वधू दोनों प्रतिज्ञाबद्ध हो चुके हैं साथ ही वे अन्न बल धन सम्पदा सुख दुख पशु वनस्पति रक्षा तथा ऋतु के अनुसार सात्विक आहार-विहार का ध्यान रखते हुए नवगृहस्थ जीवन का सम्यक् प्रकारेण निर्वाह करेंगे।

(37) कांकण दोवड़ा बांधना :

चंवरी में चार फेरे के बाद बहिन-बेटी की ओर से वर तथा वधू के एक-एक हाथ-पांव में दोवड़ा बांधा जाता है। लच्छे के दो पड़ (दो वड़ा) बंट कर उसमें लाख की एक बींटी (अंगूठी), एक कौड़ी तथा एक लोहे की बींटी को जोड़ अलग-अलग गांठ बांधकर दोवड़ा तैयार किया जाता है। यह दोवड़ा शादी के बाद विदा से पूर्व एक-दूसरे का वर-वधू द्वारा खोला जाता है। दूसरा दोवड़ा खोलने की रस्म वर के घर पूरी की जाती है। दोवड़ा से तात्पर्य दुहरे बंटे हुए लच्छे से है। यह गृहस्थ जीवन के बंधन का भी सूचक है।

(38) हथलेवा छुड़ाना :

बहिन-जंवाई रंगबंटाई के दस्तूर में मेंहदी का सूखा पाला बांटने की रस्म अदायगी करते हैं। उसी पाले के साथ घुली मेंहदी मिलाकर अंतरवास्ये में दूल्हा-दुल्हन के हाथों के बीच मेंहदी तथा रूपया रखकर हाथ बांध दिये जाते हैं। चंवरी में शादी के बाद दोनों का हथलेवा छुड़ाया जाता है। सबसे पहले दुल्हन के दादा-दादी, माता-पिता यह रस्म पूरी करते हैं और हथलेवा छुड़ाकर चांदी का आभूषण देते हैं। फिर सभी सगे समधी, अड़ोसी-पड़ोसी की महिलाएं आकर हथलेवा छुड़ाते हैं और नेग देते हैं। संबंधों के अनुसार नेग में कोई रकम तथा रोकड़ रूपये रखते हैं। हथलेवा छुड़ाना बड़े पुण्य का काम समझा जाता है। कन्या को कुछ देने का धरम करना हर परिवार वाला चाहता है इसलिए गरीब से गरीब जन भी कुछ न कुछ देकर ही प्रसन्न होता है। इस अवसर का गीत है-

धरम करो म्हारा धरमी ओ दादासा
आई धरम री वेळां ओ राज
देणो लेणो चंवर्यां में दीजो
पछे झूठी वातां ओ.....

अर्थात् धर्म करो मेरे धर्मी दादासा। धर्म करने का वक्त आ गया है। जो कुछ देना हो, चंवरी में ही दे दो फिर बालकी के चले जाने के बाद कुछ देने की बात का कोई अर्थ-विश्वास नहीं रह जायेगा। यहां हथलेवा छुड़वाने आई समधिनों का संबोधन दे-देकर गीत गाया जाता है जैसे दादासा, वीरासा, भावज, मासीसा, भुवासा आदि। यह गीत अचरू भी कहलाता है।

(39) वधू को डेरे पहुंचाना :

शादी कराने के पश्चात लड़की को बरात-स्थल-डेरे पहुंचाई जाती है। डेरे पहुंचाने का यह दृश्य अत्यंत कारूणिक तथा हृदय-द्रावक होता है जबकि अत्यंत लाड़-प्यार में पली, चांदे बैठी चिड़कली अपना सुरंगा पीहर छोड़ती है। हरिये बन की कोयलिया अपने

बावळ, मावड़, भाई-भौजाई तथा सगे समधियों, पास-पड़ोसियों से सुबक-सुबक अश्रु विगलित हो, एक-एक से गले मिलकर विदा होती है। उसकी सखी-सहेलियां और सभी नाते-रिश्तेदार उसे नाना प्रकार की उसे भलावण देते हैं जिसमें सर्वप्रिय सर्वस्व पतिदेव तथा उनके सारे परिजनों की सेवा करने का परम धर्म मुख्य रहता है।

दूसरी ओर लड़की की माता द्वारा उसी सासू को कहा जाता है- ''ओ सासू! मैंने अपनी लाड़ली को बड़े यत्न से बड़ी की है। इसकी हर चाह पूरी की। लाड़प्यार से रखा। जो चाहा सो दिया, खिलाया, पिलाया, पहनाया। मेरे आंगन की इस खिलैया को तनिक भी कष्ट मत देना,गाली मत देना।''

विदा होती हुई लड़की गीतों ही गीतों में अपने पिता से नाना प्रकार के प्रश्न कर बैठती है- ''बाबल! तुम्हारा परिंडा (पानी का स्थान) अब मेरे बिना रीता पड़ा है। मुझ धीय बिना उसे अब कौन भरेगी? कौन गायों का दूध निकालेगी? कौन उनके गोबर के उपले थेपेगी? उनके बछड़े को कौन चारा चुगायेगी और कौन तुम्हें 'बाबल' कहकर पुकारेगी?''

पिता का कोमल हृदय फूट पड़ता है और देखते-देखते अपनी भौजाई को इशारा दे वह विदा हो जाती है-

'एलो भावज घर आपणो, म्हें तो जावां परदेस
संप जो व्है तो लावजो नी तो भलां म्हाणे देस'

अर्थात् हे भावज! अब यह तुम्हारा घर तुम संभालो। मैं तो पराये घर जा रही हूं। मेरे प्रति तुम्हारे मन में संप-भावना उमड़े तो मुझे लेने भेजना अन्यथा मैं अपने घर-ससुराल में ही भली चंगी।

(40) भात जीमाना :

शादी के दिन संध्या को वधू पक्ष की ओर से भात जीमाने की परंपरा है। यह भात वह विशिष्ट जीमण (भोज) होता है जिसके लिए बरातियों के साथ-साथ वधू पक्ष के समधियों तथा अन्य मिलने वालों को आमंत्रित किया जाता है। स्थिति-परिस्थिति के अनुसार पूरी जात वालों तथा पूरे गांव वालों को भी न्यौता दिया जाता है। भोज में गुड़ की लपसी, पूड़ी तथा चने की दाल बनाई जाती है। बरातियों को अलग से खाजा पापड़ी तथा ग्वार की फली तली जाकर परोसी जाती है।

वींद यानी दूल्हे को अलग से भात जीमाया जाता है। उसके साथ उसके खास मित्र होते हैं। सबको एक बड़े थाल में बाजोट पर जीमाया जाता है। इनके लिए और भी मिष्ठान्न दही आदि परोसे जाते हैं। इस बात का पूरा ध्यान रखा जाता है कि दूल्हे के साथ आए सभी की हर मांग पूरी की जाय।

इसी अवसर पर दुल्हिन की सखी सहेल्यां दूल्हे के पांव की एक पगरखी (जूती) छिपा देती हैं। जब दूल्हा भोजन कर विदा लेता है तब अपनी एक जूती नहीं पाता है। उसके साथी इधर-उधर ढूंढ़ने का उपक्रम करते हैं। इधर सखी-सहेल्यां जोर-जोर से ठहाके देती ठिठोली पर उतर आती हैं। अंत में दूल्हे से जूती छिपाई का नेग मांगती है तब ही जूती लाकर देती हैं।

(41) खेल खेलाना :

शादी के बाद वर-वधू की हार-जीत की परीक्षा हेतु दोनों को खेलाया जाता है। इसके लिए एक पीतल की परात में तनिक हल्दी और दही मिला पानी तैयार किया जाता है। खेलाने वाली पानी से भरी परात में सात खारकें तथा एक बींटी (अंगूठी) डालती है। दूल्हा-दुल्हन दोनों अपने हाथ पानी में डाल खारकें ढूंढ़ते हैं।

जिसकी मुट्ठी में अंगूठी आ जाती है वह जीता हुआ और दूसरा पक्ष हारा हुआ समझा जाता है। हार-जीत का गीत गाती हुई औरतें दोनों को पांच-सात बार खेलाती हैं। गीत है-

'रायां रा जीत्या ओ राज लाड़ी खेलनु जाणे'
'लाड़ी जी जीत्या ओ राज लाड़ो खेलनु जाणे।'

अर्थात् वर विजयी रहा। वधू खेलना नहीं जानती। वधू जीत गई। वर को खेलना नहीं आता।

ऐसी ही रस्म वर के घर पूरी की जाती है।

(-प्रस्तुति : शब्द रंजन टीम)

- क्रमशः

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।